

एसईसीएल की उल्लेखनीय पहल, कर्मी की 2 साल की मासूम बच्ची के इलाज के लिए स्वीकृत हुए 16 करोड़ रुपये एकल रूप में देश की सबसे बड़ी कोयला कंपनी व कोल इण्डिया की सब्सिडीएरी एसईसीएल ने दिल को छू लेने वाली पहल करते हुए अपने एक कोयला खनिक की 2 वर्ष की मासूम बच्ची के इलाज के 16 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है।

एसईसीएल के दीपका कोयला क्षेत्र में कार्यरत ओवरमैन श्री सतीश कुमार रवि की बेटी सृष्टि रानी 'स्पाइनल मस्क्यूलर एट्रोफी' (एसएमए) नामक एक बेहद ही दुर्लभ बीमारी से ग्रस्त है। अमूमन छोटे बच्चों में होने वाली इस बीमारी में स्पाइनल कॉर्ड और ब्रेन स्टेम में नर्व सेल की कमी से मांसपेशियां सही तरीके से काम नहीं कर पातीं और धीरे-धीरे यह बीमारी प्राणघातक होती चली जाती है। इसका इलाज बेहद ही महंगा है और इलाज में इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन 'जोलर्जेस्मा' की कीमत 16 करोड़ रुपये है। अब कोल इंडिया ने अपने परिवार की बिटिया के इलाज के लिए 16 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है।

एसईसीएल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया "सतीश जैसे कर्मी को अपनी बच्ची के इलाज के लिए इतनी ऊंची कीमत पर इंजेक्शन खरीद पाना संभव नहीं था। कम्पनी ने न सिर्फ अपने परिवार की बेटी की जान बचाने के लिए यह बड़ी पहल की है, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों और दूसरे संस्थानों के लिए भी एक मिसाल पेश की है, जो इस धारणा पर कार्य करते हैं कि कर्मी और उनका परिवार उनकी सबसे बड़ी पूंजी है और उनकी जिंदगी बचाना संस्थान का प्राथमिक कार्य है।"

गौरतलब है कि एसईसीएल की यह पहल ऐसे समय में आई है, जब देश भर में कोल इंडिया और उसकी अनुषंगी कंपनियों में कार्यरत कर्मी बिजली बनाने के लिए कोयले की बढ़ती मांग के मद्देनजर जरूरी सप्लाई सुनिश्चित किए जाने हेतु दिन-रात अनवरत कार्य में जुटे हैं।

सृष्टि रानी के इलाज के लिए विदेश से आयात कर 16 करोड़ रुपये का 'जोलर्जेस्मा' इंजेक्शन दिया जाना है। एम्स, दिल्ली में इलाज के बाद सृष्टि फिलहाल अपने पिता के कार्यस्थल दीपका के आवास में रह रही हैं, जहां उन्हें पोर्टेबल वेंटिलेटर पर रखा गया है।

गौरतलब है कि 22 नवंबर, 2021 को अपने जन्म के 6 महीने के भीतर ही सृष्टि काफी बीमार रहने लगी। इस बीच कोविड महामारी की वजह से उसके माता-पिता उसे बेहतर इलाज के लिए बाहर नहीं ले जा सके और स्थानीय स्तर पर उसका इलाज चलता रहा। हालत में सुधार न होता देख श्री सतीश दिसंबर, 2020 में सृष्टि के इलाज के लिए सीएमसी वेल्लोर गए, जहां जांच के बाद पता चला कि उसे 'स्पाइनल मस्क्यूलर एट्रोफी' (एसएमए) है और 'जोलर्जेस्मा' इंजेक्शन की जरूरत होगी, जो भारत के बाहर उपलब्ध है। 30 दिसंबर, 2021 को जब सतीश, सृष्टि को वेल्लोर से लेकर छत्तीसगढ़ के कोरबा जिला स्थित दीपका के अपने आवास लौट रहे थे तो रास्ते में ही सृष्टि की तबीयत ज्यादा खराब हो गई और उसे एसईसीएल से इंपैनलड अपोलो अस्पताल बिलासपुर में भर्ती करना पड़ा। वहां काफी समय इलाज चलने के बाद सतीश ने एम्स दिल्ली से सृष्टि का इलाज कराया। फिलहाल बच्ची का इलाज घर पर ही चल रहा है, जहां वह पोर्टेबल वेंटिलेटर पर है।

---

जनसम्पर्क अधिकारी

एसईसीएल

SECL Press Release - 18.11.21

SECL will give 16 crores for treatment of a 2 year old kid of its coal miner

In what could be called a highly responsible corporate social behavior, SECL a subsidiary of Coal India Ltd (CIL) , has agreed to bear Rs. 16 crores for treatment of a 2-year-old kid of its coal miner suffering from a rare disease called 'Spinal Muscular Atrophy' (SMA).

This heart touching move of Coal India assumes significance at a time when its coal miners are toiling day and night to ensure sufficient coal supply to the nation to produce power with the economy picking up and there is a huge fall in coal imports because of a about three-fold hike in coal prices in the international market.

Srishti Rani, daughter of Shri Satish Kumar Ravi - an Overman working in Dipka coal area of South Eastern Coalfields Limited (SECL) - is suffering from SMA - a genetic disorder in which a person can't control the movement of muscles due to loss of nerve cells in the spinal cord and brain stem.

Srishti needs to be jabbed with an injection named Zolgensma, which costs Rs. 16 crores. The kid is presently put on a portable ventilator at her residence at Dipka coal area of SECL in Chhattisgarh after getting last treatment from AIIMS, Delhi.

"It was not possible for an employee like Satish to buy an injection at such a high price. Now, CIL management has taken a welcome decision to bear the cost of injection, which has to be imported. With this generous gesture, CIL has also set an exemplary example for other PSUs and Organizations thinking human resources along with their families are their real wealth and saving their lives at any cost is the first and foremost job," a senior SECL official said.

Srishti was born on November 22, 2019. Within six months after her birth, she started falling sick. Because of the Covid-19 pandemic, her parents could not move outside for her better treatment and she could only get local treatment till the time they moved to Christian Medical College (CMC) Vellore in December, 2020, where she was diagnosed with SMA. On December 30, 2020, while returning from Vellore to Ravi's workplace in the Korba district of Chhattisgarh, her health deteriorated and she was admitted at SECL empanelled Apollo Hospital, Bilaspur got treated for a long time there. Later, she also got treatment at AIIMS, Delhi and the kid is presently put on a portable ventilator at her residence at Dipka coal area of SECL in Chhattisgarh.

---



2021/4/6 13:51

